अक्रम यूथ

जनवरी 2020 | हिन्दी

दादा भगवान परिवार

₹20

The power of 9
series 2

किसी भी धर्म का किंचित्मात्र प्रमाण न दुभे

The Augmented Reality Magazine

For details, visit page **24**

अनुक्रमणिका

04 कलम - 2

05 नियमित कलम - 2 बोले....

विश्व के धर्म 06

ज्ञानी विद यूथ 08

10 धर्म और धार्मिक...

12 Q and A

Bhakti Karaoke निश्चय से नमन करूँ 15

दादाश्री के पुस्तक की झलक 16

18 महान पुरुषों की झाँकी

20 खुद को परखें...

#कविता 21

जनवरी 2020
वर्ष : 7, अंक : 09
अखंड क्रमांक : 81

संपर्क सूत्र :
ज्ञानी की छाया में,
त्रिमंदिर संकुल, सीमंधर सिटी,
अहमदाबाद-कलोल हाइवे,
मु.पो. - अडालज,
जिला : गांधीनगर-382421, गुजरात
फोन : (079) 39830100

email: akramyouth@dadabhagwan.org
website: youth.dadabhagwan.org
store.dadabhagwan.org/akram-youth

संपादक : डिम्पल मेहता

Printer & Published by
Dimple Mehta on behalf of
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj -
382421. Taluka & Dist - Gandhinagar

Owned by
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj -
382421. Taluka & Dist - Gandhinagar

Published at
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj -
382421. Taluka & Dist - Gandhinagar

Printed at : Amba Offset
B-99, GIDC, Sector-25,
Gandhinagar – 382025. Gujarat.
Total 24 Pages with Cover page

Subscription
Yearly Subscription
India :200 Rupees
USA: 15 Dollars
UK: 12 Pounds
5 Years Subscription
India : 800 Rupees
USA: 60 Dollars
UK: 50 Pounds
In India, D.D. / M.O. should be drawn in favour of "Mahavideh Foundation" payable at Ahmedabad.

© 2020, Dada Bhagwan Foundation.
All Rights Reserved

संपादकीय

प्यारे दोस्तों,

अक्रम यूथ की नौ कलमों की श्रृंखला के इस अंक में हम दूसरी कलम को विस्तार से समझेंगे।

"धर्म" शब्द के अलग-अलग अर्थ कहे गए हैं। किसी भी वस्तु के स्वाभाविक गुणों को उस वस्तु का धर्म कहा जाता है। उदाहरण के तौर पर अग्नि का धर्म उसकी गरमी और तेज है। जबकि शास्त्रों में तो वेदों में बतलाए गए शुभ कर्मों को धर्म कहा गया है। हम अगर प्राचीन अर्थ देखें तो धर्म अर्थात् जीवन जीने का न्यायपूर्ण और कर्तव्यपूर्ण तरीका।

परम पूज्य दादा भगवान इनमें से किस धर्म की बात कर रहे हैं, ऐसा प्रश्न उठना स्वाभाविक है। इस अंक में हम धर्म की नई ही परिभाषा और सभी रिलेटिव धर्मों के बारे में परम पूज्य दादा भगवान क्या कहना चाहते हैं और जाने-अनजाने किसी भी धर्म का प्रमाण हम से कहाँ-कहाँ दुभ जाता है, यह समझेंगे। साथ ही ऐसी गलतियाँ न करने की चाबियाँ प्राप्त करेंगे और दूसरी कलम द्वारा ऐसा निश्चय करेंगे कि दोबारा कभी भी हमसे किसी भी धर्म का किंचित्मात्र भी प्रमाण न दुभे। करेंगे न?

- डिम्पल मेहता

कलम २

"हे दादा भगवान! मुझे, किसी भी धर्म का किंचित्मात्र भी प्रमाण न दुभे, न दुभाया जाए या दुभाने के प्रति अनुमोदना न की जाए, ऐसी परम शक्ति दीजिए। मुझे, किसी भी धर्म का किंचित्मात्र भी प्रमाण न दुभाया जाए ऐसी स्याद्वाद वाणी, स्याद्वाद वर्तन और स्याद्वाद मनन करने की परम शक्ति दीजिए।"

नियमित कलम - २
बोलने के बाद के अनुभव

पहले मैं अलग-अलग धर्मों की कम्पैरिज़न करती थी और मुझे ऐसा लगता था कि अन्य धर्मों की तुलना में हमारा धर्म ज्यादा आगे है। लेकिन नियमितरूप से दूसरी कलम बोलने से यह बहुत कम हो गया और अब समझ में आ रहा है कि सभी धर्म अपनी जगह पर सही ही हैं।

- भाविनी, मुंबई

पहले मैं किसी धर्म के साधु या किसी फॉलोअर का अयोग्य वर्तन या व्यवहार देखकर उस धर्म के बारे में ही नेगेटिव सोचती थी कि इस धर्म वाले ऐसे ही होते हैं। अलग-अलग धर्मों के नियम या रीति-रिवाज देखकर मेरे भाव बिगड़ जाते और कभी-कभी वाणी से भी विराधना हो जाती थी। पहले मेरे पास अगर कोई दूसरे धर्म का नेगेटिव बोलता था तो मैं उसकी बात से सहमत हो जाती थी, वह तो बिल्कुल ही बंद हो गया है। पहले दो अलग-अलग धर्म के लोगों को किसी बात पर झगड़ा करते देखकर मुझसे बहुत विराधना हो जाती थी लेकिन अब ऐसी बात से मैं अपसेट नहीं होती और अब मैं सामने वाले व्यक्ति को समझा भी सकती हूँ।

- कृतिका, मुंबई

विश्व के धर्म

हिन्दु धर्म

सिख धर्म

बौद्ध धर्म

क्रिश्चियन धर्म

कन्फ्युशियसी धर्म

वैश्विक धर्म

शिन्तो धर्म

इस्लाम धर्म

ताओ धर्म

जरथुष्ट्री धर्म

इस्कॉन

यहूदी धर्म

स्वामीनारायण संप्रदाय

रामकृष्ण मिशन

जैन धर्म

ब्रह्माकुमारी

बहाई धर्म

ज्ञानी विद यूथ

मेरे जीवन में बहुत बदलाव आया है। इसमें नौ कलमों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। व्यवहार में प्रत्येक कलम द्वारा ज्यादा से ज्यादा शक्ति माँगना मुझे बहुत अनुकूल आया।

प्रश्नकर्ता : कुछ समय से मेरे जीवन में बहुत बदलाव आया है। इसमें नौ कलमों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। व्यवहार में प्रत्येक कलम द्वारा ज्यादा से ज्यादा शक्ति माँगना मुझे बहुत अनुकूल आया। कल आपने सूक्ष्म धर्म की बात की। तो मुझे लगा मन का धर्म विचार करना है न!

पूज्यश्री : हाँ।

प्रश्नकर्ता : तो मन के अच्छे-बुरे विचारों में डिस्टर्ब हो जाएँ तो उसे बदनाम किया ही कहलाएगा न?

पूज्यश्री : हाँ। मन मन के धर्म में है तो अहंकार अहंकार के धर्म में है। बुद्धि बुद्धि के धर्म में है। दखल करना बुद्धि का धर्म है।

प्रश्नकर्ता : तो हमने दखल की कहा जाएगा?

पूज्यश्री : नहीं, अब तो हम आत्मा हैं। आत्मा का धर्म क्या है? देखना-जानना।

प्रश्नकर्ता : हाँ।

पूज्यश्री : आत्मा ज्ञान वाला है और ज्ञान से जो देखता-जानता है सिर्फ वही हिस्सा आत्मा है। आत्मा को अपने धर्म में रहना है। लेकिन किसी के धर्म को "मैंने किया" कहता है इसलिए मार पड़ती है, गुनाह लगता है।

प्रश्नकर्ता : इसे दखल की कहा जाएगा?

पूज्यश्री : दखल की कहलाएगा। दखल तो वास्तव में बुद्धि करती है, कितना बुरा विचार आया। आप क्यों अच्छे और बुरे की झंझट में पड़ते हो? समभाव से निकाल करें तो आत्मधर्म में आ गए हम। पाँच आज्ञा से आत्मधर्म में रह सकते हैं। अहंकार के इस्तेमाल को धर्म कहते हैं। खुद "मैं दानेश्वरी हूँ" माने वह उसका अहंकार कहलाता है और मुझे दान देना है, मेरा धर्म है। "मैं चोर हूँ," ऐसा मानना वह अहंकार कहलाता है और "चोरी करना" वह उसका धर्म है। अब अहंकार और अहंकार का कार्य, उससे ऊपर हम आत्मा हैं और आत्मा का कार्य क्या? देखना-जानना कि चंदू दानी है, दान देता है। वह व्यवस्थित के ताबे में है, मैं नहीं हूँ। तो हम ज्ञान में आ गए। कोई इंजीनियर हो और आज मशीन रिपेरिंग करता हो, तो उसने पिछले जन्म में भाव किए हैं। इसलिए आज वह अहंकार के रूप में है और अहंकार का धर्म इस जन्म में फल देता है। जैसे, मैं इनकी बहू हूँ, ये मेरी सास हैं, मैं घर संभालती हूँ, ये मेरे दो बच्चे हैं। मेरा धर्म है सभी को खिलाना, संस्कार देना, तो वह बहूपना यानी वाइफ(पत्नी) का धर्म हुआ। और सासपना यानी सास का धर्म। ऐसा हर एक अस्तित्व और अस्तित्व यानी क्या? मैं हूँ और फिर मैं ऐसा करता हूँ, वह फिर उसका धर्म हुआ। अर्थात् अहंकार और अहंकार का धर्म। यानी ऐसा कहें कि, "चोरी करते हो? पता नहीं चलता? समझते नहीं? कितना बुरा कर रहे हो?" तो उसके धर्म को तोड़ा कहा जाएगा, अहंकार को दुभाया कहा जाएगा। और किसी के भी धर्म का प्रमाण दुभाएँ और अपना मोक्ष हो, ऐसा होगा नहीं। उससे कह सकते हैं कि भाई, आप किसी की चीज़ ले लेते हो, तो हमारी चीज़ कोई ले ले तो हमें अच्छा लगता है? और लोगों को पता चलेगा तो आपको पकड़कर मारेंगे। इसलिए आप परिणाम के बारे में सोचो। इसमें से बाहर आ जाओ। तय करो कि यह "चोरी करना" गलत है।

प्रश्नकर्ता : ठीक है।

पूज्यश्री : गलत कहने के बजाय "ऐसा नहीं करना चाहिए," "ऐसा करना चाहिए," ऐसी जागृति और समझ देना, इतना हमारी ओर से होना चाहिए।

प्रश्नकर्ता : हाँ, ठीक है।

पूज्यश्री : और उसे यह समझना चाहिए कि यह चोरी की क्रिया कर रहा हूँ वह गलत है, अब नहीं करूँगा। जितनी बार करे उतनी बार पश्चाताप करना चाहिए। लेकिन इसमें हमें यह सीखना है कि वह खुद आत्मा है। वह अपने व्यू पोइन्ट पर आया है।

प्रश्नकर्ता : दूसरी कलम में कुछ सूक्ष्म स्पष्टीकरण है?

पूज्यश्री : सूक्ष्म तो ठेठ आत्मा तक पहुँचता है। आत्मा ज्ञाता-दृष्टा है, अर्थात् ज्ञान उसका गुण है और जानना उसका धर्म है। फिर अज्ञानता में अहंकार उत्पन्न हुआ इसलिए "मैं चोर हूँ," ऐसा कहता है। और फिर उसका चोरी का धर्म, इसलिए चोरी की क्रिया करता है। यानी यह सूक्ष्म ठेठ आत्मा तक पहुँचता है। अर्थात् खुद आत्मा बन गया तो उसके अहंकार का प्रमाण नहीं दुभेगा, धर्म का प्रमाण नहीं दुभेगा। फिर वह उसे आत्मा के रूप में देख सकेगा। अर्थात् सूक्ष्मतर, सूक्ष्मतम लेवल पर आपको वह रिलेटिव में निर्दोष दिखाई देगा, रियल में आत्मा के रूप में दिखाई देगा।

प्रश्नकर्ता : यानी हर एक को निर्दोष देखने की जो दृष्टि है उसमें सब आ गया?

पूज्यश्री : आ ही गया, अंत में यही आएगा।

लोग धर्म और
धार्मिक व्यक्तियों के बीच मतभेद क्यों रखते हैं?

उसके कारण

खुद श्रेष्ठ है ऐसी अनुभूति

वे जैसी मान्यता वाले वातावरण में पले बड़े हैं उस कारण वे अन्य धर्मों को अलग मानते हैं और अंत में मतभेद करते हैं।

जब पूर्वाग्रह रखकर इनका इस्तेमाल होता हैं तब विवाद का मुख्य कारण बन जाते हैं।

प्रचार-प्रसार के साधन (सोशियल मीडिया)

अधूरी और विवादास्पद जानकारी

कई बार सारे तथ्य लोगों के समक्ष नहीं रखे जाते हैं और किसी एक पक्ष की तरफदारी की जाती हो, तो दूसरे पक्ष के लिए अशांति का कारण बनती है।

मान्यता और व्यवहार में असमानता

विविध धर्मों द्वारा अनुकरण किए जाने वाले धार्मिक कार्य, उन धर्मों को नापने का एक गेज (पैमाना) बन जाते हैं और जब किसी की मान्यता उनसे नहीं मिलती तब वे पूरे धर्म के बारे में नेगेटिव बातें सोचना और कहना शुरू कर देते हैं।

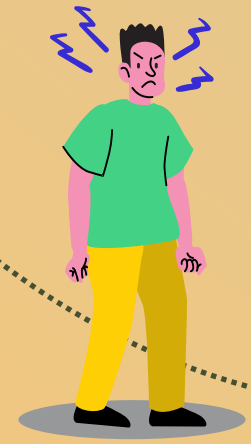

संकीर्ण दृष्टि

कई बार ऐसा होता है कि लोग एक ही व्यक्ति के साथ के अपने अच्छे-बुरे अनुभव के आधार पर पूरे धर्म के बारे में निर्णय ले लेते हैं।

धार्मिक पोशाक में भिन्नता

बाह्य दिखावा और ड्रेस अप भी एक अहम् भूमिका निभाते हैं, खासतौर पर कुछ संप्रदाय के समाज में।

Q & A

प्रश्नकर्ता : मेरा फ्रेन्ड राज, अपनी फैमिली के साथ एक बार यात्रा पर गया था। उस दौरान राज ने देखा कि एक मंदिर में पूजारी ने मूर्ति को विविध भोग लगाए थे जिनमें से एक व्यंजन आलू का भी था। इस बारे में राज ने मुझसे कहा कि "कोई पूजारी भगवान को आलू का भोग कैसे लगा सकता है? जैन धर्म इसकी अनुमति नहीं देता। सटीक धर्म और भगवान को किस चीज़ का भोग लगाना चाहिए उसका इस पूजारी को ज्ञान नहीं है।"

यह बात सुनकर मुझे भी थोड़ा अनुचित लगा कि पूजारी जी ने ऐसा क्यों किया होगा?

आप्तपुत्र : हर एक धर्म अपने व्यू पोइन्ट के आधार पर चलते हैं। आज हम जिस जगह पर हैं वहाँ इन सभी व्यू-पोइन्ट्स को पार करके आगे आए हैं। जैसे सभी कक्षा की पढ़ाई-लिखाई एक समान नहीं रहती न? कुछ धर्मों के व्यू पोइन्ट के अनुसार आलू नहीं खाने चाहिए और अन्य धर्मों की मान्यता के अनुसार खाने में हर्ज नहीं है। कोई अगर हमारी मान्यता के अनुसार नहीं करता हो तो हमें भाव नहीं बिगाड़ने चाहिए, वर्ना हमें बंधन होगा।

प्रश्नकर्ता : एक दिन मैं अपने दोस्त के परिवार के साथ एक आश्रम में गया। वहाँ मैंने देखा कि उनके गुरु कुछ दर्शनार्थियों को पूजा, ध्यान एवं अन्य धार्मिक विधियाँ एवं क्रियाएँ करने के बारे में उपदेश दे रहे थे। यह देखकर मैंने सोचा कि ये सब दादा भगवान के सिद्धांतो से अलग है। मुझे ऐसा नहीं लगा कि ये उपदेश मुझे मेरे अंतिम ध्येय की ओर ले जाने में सहायक बनेंगे। यह देखकर मुझे उन गुरु एवं संप्रदाय के बारे में नेगेटिव होने लगा कि यहाँ तो आना ही नहीं चाहिए। तो क्या यह विराधना कहलाएगी?

आप्तपुत्र : हम फैमिली या फ्रेन्ड सर्कल के साथ गए हों तो हमें वहाँ सब देखना चाहिए, दर्शन करने चाहिए लेकिन गलती नहीं निकालनी चाहिए। क्रियाओं से लेकर नियमों तक सबकुछ सभी धर्मों के अलग ही होते हैं इसलिए वे गलत हैं या सही यह चेक नहीं करना चाहिए। क्रमिक मार्ग यानी ऐसा ही रहता है, वहाँ आपको अक्रम देखने नहीं मिलेगा। क्रमिक यानी क्रियाएँ ही रहती हैं। सभी धर्मों ने शांति के लिए अलग-अलग मार्ग एवं क्रियाएँ बतलाई हैं। किसी को भजन से शांति मिलती है, किसी को योग क्रिया अच्छी लगती है, कोई माला फेरकर भक्ति करते हैं। जबकि अक्रम अर्थात् समझ एवं भाव क्रिया का मार्ग है। अतः अन्य जगहों पर अक्रम जैसा ढूँढोगे तो गलत ही दिखाई देगा और द्वेषभाव ही होगा। अब हम अक्रम मार्ग पर विज्ञान से बढ़ना चाहते हैं। सभी अपने-अपने व्यू पोइन्ट से सही हैं। आपको यह अनुकूल है तो आप यह कर रहे हैं और उसे वह अनुकूल है तो वह कर रहा है। लेकिन द्वेषभाव नहीं करना चाहिए और अगर हो जाए तो, उसके लिए ही दादा ने दूसरी कलम दी है कि "किसी भी धर्म का प्रमाण न दुभे..." उसे बोलना है और शक्ति माँगनी है। और यह याद रखना है कि अगर द्वेषभाव होगा तो हमारी वाणी भी नेगेटिव निकलेगी। दादा ने कहा है कि "जब संयोग मिले तब इन सभी मंदिरों में दर्शन करने जाना चाहिए और जो विराधनाएँ की हैं उन्हें धो डालना चाहिए।"

Get ready to Win This CONTEST

9 kalams
9 Akram Youth
15 questions For Every Month

Exciting Prizes to be Won

The power of 9 QUIZ

Today's Youth App

The Official App of Dada Bhagwan Youth Group

for visiting youth.dadabhagwan.org

for downloading Free PDF of Akram Youth magazine

for Subscribing to Akram Youth Magazine

to play The Power of 9 QUIZ

and much more...

ANDROID APP ON Google play

Download on the App Store

View this page in AR App

BHAKTI KARAOKE

निश्चयथी नमन करूँ

Nischay thi naman - Bhakti Pad
http://bit.do/nichay-thi-naman

Nischay thi naman - Instrumental
http://bit.do/nischay-thi-naman-instru

Download Audio Pad and sing along.

Upload your recorded version on **Akram Youth Facebook Page** before 1st Mar 2020 & win prizes.

निश्चयथी नमन करूँ दादा सुचरण, व्यवहारे वंदन करूँ, अभेद देवोगण।
प्रथम पाये लागु हूँ, ऋषभ जीनेश्वर मूल, महावीर ने सर्वज्ञ सहु, तीर्थंकर वीतराग।
नमो भगवते वासुदेवाय, श्रीकृष्ण ममः नीलकंठ नमः शिवाय, अर्ध नारी नटेश्वर।
सहजानंद स्वामी नारायण, महकी घोड़ी सवार, वंदे वल्लभाचार्यजी, जगतगुरु शंकराचार्य।
नमस्कार जरथोस्तने, पूजक सूर्य अगन, क्राइस्ट ख्रिस्ती जीसस ने, विश्व प्रेमनुं झरण।

या अल्ला परवर दिगार, पयगंबर चंद्र कुरान, गुरु नानकने नमन, गौतम बुद्ध भगवान,
नमुं मीरा-नरसिंह ने, अखा-कबीर-जलाराम, तानेश्वर-एकनाथ संत, साँई-तुलसी-तुकाराम।
साधु-साध्वी-आचार्यने, भक्तों जैनोने नमुं, साधु-साध्वी-आचार्यने, भक्तों वेदांतीने नमुं,
साधु-साध्वी-आचार्यने, भक्तों पुष्टि पंथ, साधु-साध्वी-आचार्यने, भक्तों स्वामीनारायण।

नमन हो भक्तों ने, नमता जीसस-जरथोस्त ने, वंदु प्रेमे पूजता, अल्ला-नानक भक्तने।
वैमानिक ज्योतिष्क देवो, भुवनवासी व्यंतर, व्यवहारे वंदन करूँ, करो मोक्ष मुज सुतर।
निश्चयथी नमस्कार करूँ सर्व सिद्ध भगवंतने, सर्व ज्ञानी ब्रह्मांड तणा, तीर्थ स्वामी सीमंधरने।

निश्चयथी नमस्कार करूँ, सर्वज्ञ दादा भगवानने, सर्व दादा ज्ञानीने वर्तमान तीर्थंकरोने।
परमेष्टि भगवंतोने, पंच परमेष्टि भगवंतोने त्रिषष्ठि सलाखा पुरुषोने, नमुं संतो, सत्पुरुषोने।
फरी फरी निश्चे नमुं, मूर्तिमान मोक्ष स्वरूपने... दस लाख वरसे प्रगटी, प्रत्यक्ष प्रगट ज्योतने।

दादाश्री के पुस्तक की झलक

प्रत्येक का अपने अनुसार सही है। अर्थात् हर एक का जो स्वीकार करता है, उसे कहते हैं स्याद्वाद।

किसी भी धर्म का प्रमाण न दुभे.....

दादाश्री : किसी का भी प्रमाण दुभना नहीं चाहिए। कोई भी गलत है, ऐसा नहीं लगना चाहिए। "एक" संख्या कहलाती है या नहीं कहलाती?

प्रश्नकर्ता : हाँ, जी।

दादाश्री : तो "दो" संख्या कहलाती या नहीं कहलाती?

प्रश्नकर्ता : हाँ, कहलाती है।

दादाश्री : तो "सौ" संख्या वाले क्या कहेंगे? "हमारा सही," "आपका गलत," ऐसा नहीं कह सकते। सभी का सही है। "एक" का "एक" के अनुसार, "दो" का "दो" के अनुसार, प्रत्येक अपने अनुसार सही है। अर्थात् हर एक का जो स्वीकार करता है, उसे कहते हैं स्याद्वाद। कोई चीज़ अपने गुणधर्म में है और हम उसके कुछ ही गुणों का स्वीकार करें और बाकी के गुणों का अस्वीकार करें तो यह गलत है। स्याद्वाद अर्थात् प्रत्येक के प्रमाण अनुसार। 360 डिग्री होने पर सभी का सही कहलाता है लेकिन उसकी डिग्री तक उसका सही और इसकी डिग्री तक इसका सही।

अतः मुस्लिम धर्म गलत है, ऐसा हम नहीं बोल सकते। हर एक धर्म सही है, कोई गलत नहीं है। हम किसी को गलत कह ही नहीं सकते। वह उसका धर्म है। माँसाहार करता हो, उसे हम गलत कैसे कह सकते हैं? वह कहेगा, "माँसाहार करना मेरा धर्म है।" तो हम "मना" नहीं कर सकते। वह उसकी मान्यता

है, बिलीफ है उसकी। हम किसी की "बिलीफ" को तोड़ नहीं सकते। लेकिन जो शाकाहारी परिवार में जन्में हैं यदि वे लोग माँसाहार करते हों तो हमें उन्हें कहना चाहिए कि, "भैया, यह अच्छी बात नहीं है।" फिर उसे माँसाहार करना हो तो उसमें हम विरोध नहीं कर सकते। हमें समझाना चाहिए कि यह चीज़ "हेल्पफूल" नहीं है।

स्याद्वाद अर्थात् किसी धर्म का प्रमाण नहीं दुभाना। जितनी मात्रा में सत्य हो उतनी मात्रा में उसे सत्य कहें और जितनी मात्रा में असत्य हो उसे असत्य कहें, उसका अर्थ प्रमाण नहीं दुभाया। क्रिश्चियन प्रमाण, मुस्लिम प्रमाण, किसी भी धर्म का प्रमाण नहीं दुभना चाहिए। क्योंकि सभी धर्म 360 डिग्री में समा जाते हैं। रियल इज़ द सेन्टर एन्ड ऑल दिज़ आर रिलेटिव व्यूज़। सेन्टर वाले के लिए सभी रिलेटिव व्यूज़ समान हैं। भगवान का स्याद्वाद यानी किसी को किंचित्मात्र दुःख नहीं हो, फिर चाहे कोई भी धर्म हो।

अर्थात् स्याद्वाद मार्ग ऐसा होता है। हर एक के धर्म का स्वीकार करना पड़ता है। सामने वाला दो थप्पड़ मारे तो भी हमें उसका स्वीकार करना चाहिए क्योंकि सारा जगत् निर्दोष है। दोषित दिखाई देता है, वह आपके दोष के कारण दिखाई देता है। बाकी, जगत् दोषी है ही नहीं। लेकिन वह आपकी बुद्धि दोषित दिखाती है कि इसने गलत किया।

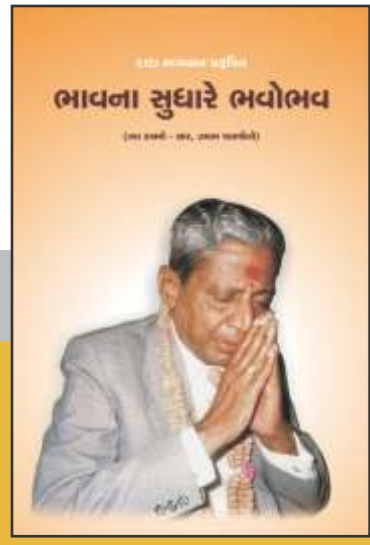

किसी भी धर्म का प्रमाण नहीं दुभना चाहिए। क्योंकि सभी धर्म 360 डिग्री में समा जाते हैं। रियल इज़ द सेन्टर एन्ड ऑल दिज़ आर रिलेटिव व्यूज़।

महान पुरुषों की झाँकी

सिद्धराज जयसिंह

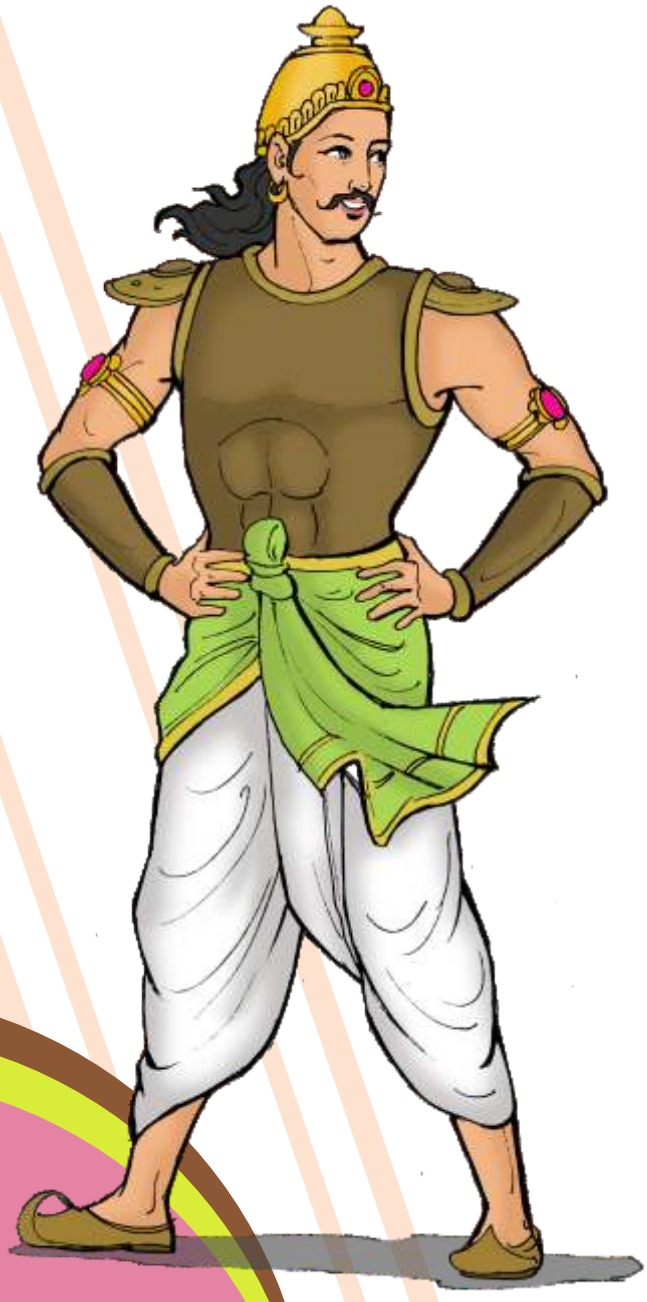

जयसिंह सोलंकी (इ.स.1091 - 1143) चौथे तथा सब से प्रसिद्ध सोलंकी राजा थे। इ.स. 1096 से इ.स. 1143 तक उन्होंने गुजरात पर शासन किया। गुजरात में वे अपने उपनाम "सिद्धराज" से ज्यादा प्रसिद्ध हुए। उनका राज्यकाल गुजरात का स्वर्णयुग माना जाता है। मुस्लिम आक्रमण के कारण गुजरात का पतन हुआ, उससे पहले का यह अंतिम हिन्दू साम्राज्य था।

महाराज सिद्धराज के समय में उनके राज्य का चारों तरफ बोल-बाला था। दूर-दूर से यात्री गुजरात देखने आते थे। यहाँ के कलाकार, कला, स्थापत्य और विद्या पर सब वारी जाते थे। और यहाँ ऐसा नहीं था कि राजा के आराध्य देव को ही सभी मानें! राजा जिस धर्म का पालन करते हों उसी धर्म का पालन सभी करें! प्रजा अनेक धर्मों का पालन करती थी। अन्य धर्म के प्रति लोगों का उदार भाव था।

महाराजा सिद्धराज का कुल धर्म शैव धर्म था। वे सोमनाथ महादेव को अपना इष्ट देव मानते थे। वे अपने धर्म का पालन करते थे और अन्य धर्मो पर भी समान भाव रखते थे। खुद हमेशा शिव मंदिर में जाते थे लेकिन इसका मतलब यह नहीं था कि विष्णु मंदिर या जैनों के देरासर पर द्वेष भाव था!

सोरठ के मंत्री सज्जन मेहता ने गिरनार पर्वत पर राज्य के पैसों से देरासर बनवाए तो

भी उन्हें मंजूरी दी थी। अनेक लोगों के विरोध के बावजूद भी उन्होंने वेष बदलकर जैनों के महातीर्थ शत्रुंजय की यात्रा की थी।

धर्मांध लोग जब उल्टी-सीधी बातें करते तब महाराजा सिद्धराज कहते, "जो शांति-संतोष तथा पड़ोसी के साथ प्रेम से रहे वही असली प्रजा है, वही सच्चा नागरिक है। मेरे लिए तो शैव, वैष्णव और जैन सभी समान हैं। मेरी प्रजा में तो मुसलमान भी हैं। जो इस भूमि के प्रति वफादार रहे, खुद को इस देश की संतान माने और शांति से अपने इष्टदेव की पूजा करे वही मेरी प्रजा, वही मेरे रक्षण की अधिकारी!"

"नागर और जैन मेरी दो आँखे हैं। इन दोनों जाति के लोग मेरे राज्य के मंत्री हैं। मैं कौन सी आँख रखूँ और कौन सी आँख फोडूँ?"

"रजपूत मेरी दो भूजाएँ हैं : कोई शैव है, कोई वैष्णव है। कौन सी भूजा रखूँ और कौन सी काटूँ? "शूद्र तो मेरे पैर हैं। पैर कमज़ोर हों तो पूरा शरीर कमज़ोर। अपने पैरों को काटूँ ऐसा मूर्ख नहीं हूँ मैं।"

"मेरी कोई ज्ञाति नहीं है, जाति नहीं है, वर्ण नहीं है। मेरे पास तो एक ही पिता के संतान जैसी यह प्रजा है।"

"प्रजा चाहे काली-गोरी हो, या बलवान-निर्बल हो, या उच्च-निम्न जाति की हो, पर पिता की तरह मेरी नज़र सभी पर समान रहती है।"

सिद्धराज के दरबार के कई जाने-माने व्यक्ति अन्य धर्म के, मुख्यतः जैन धर्म के थे। यद्यपि सिद्धराज ने किसी भी धर्म को राजनीति में प्रवेश करने नहीं दिया था। प्रारंभ के दिनों में सिद्धराज की सत्ता सशक्त बनाने में उनके जैन मंत्रियों और जैन धर्म के अनुयायियों ने मुख्य भूमिका निभाई थी। लेकिन सिद्धराज ने कभी भी किसी धर्म के प्रति पक्षपात नहीं किया था। उन्होंने जैनों पर लगाए गए कई प्रतिबंधों को हटा दिया था।

धर्मांध लोग जब उल्टी-सीधी बातें करते तब महाराजा सिद्धराज कहते, "जो शांति-संतोष तथा पड़ोसी के साथ प्रेम से रहे वही असली प्रजा है

मुस्लिमों के प्रति भी उनका समभाव रहा। एक बार संप्रदायिक दंगों के कारण कुछ धार्मिक स्थल ध्वस्त हो गए थे। सिद्धराज ने इस घटना को ध्यान में रखकर छानबीन करवाई और मुज़रिमों को दंड दिया साथ ही नई मस्जिद बनाने के लिए एक लाख बलोतरा (स्थानिय सिक्के) दिए। यह बात इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि सिद्धराज परिवार के आराध्य देव सोमनाथ के मंदिर पर मुहम्मद गज़नी ने सत्रह बार आक्रमण करके उसे तहस-नहस कर दिया था, फिर भी उन्होंने यह उदारता दिखाई। ये सारी घटनाएँ धर्मसहिष्णुता और न्यायप्रियता की गवाह हैं।

चलो, खुद को परखे...

हमें तो ऐसा ही लगता है कि "मुझसे तो किसी भी धर्म का अहम् दुभता ही नहीं है।" लेकिन क्या यह सत्य है?

नीचे कुछ ऐसी परिस्थितियाँ दी गई हैं जो प्रायः सभी के जीवन में आती ही हैं। तो चलो, चेक करें कि ऐसी परिस्थिति के समय क्या हमारे भाव कभी बिगड़े हैं?

1. आप किसी मंदिर में गए हों और वहाँ आपको फोटो खींचने के लिए मना करें या वहाँ के कुछ नीति- नियमों के बारे में पता चले तब....	हाँ / नहीं
2. आपने किसी भी माध्यम द्वारा (टी.वी., इन्टरनेट, रेडियो वगैरह) किसी संप्रदाय के बारे में बातें सुनी हों तब...	हाँ / नहीं
3. किसी धर्म या संप्रदाय के साधु या फॉलोअर्स की लाइफस्टाइल देखकर...	हाँ / नहीं
4. आप खुद जिस संप्रदाय को मानते हैं, वहाँ आपकी इच्छा के विरूद्ध आचरण हो या आपकी अपेक्षा पूरी न हो तब....	हाँ / नहीं
5. किसी भी धर्म या संप्रदाय के प्रोग्राम में फॉलोअर्स की बहुत भीड़ लगी हो तब...	हाँ / नहीं
6. किसी व्यक्ति के साथ टकराव या मतभेद हो जाए तो वह व्यक्ति जिस धर्म या संप्रदाय को मानता हो उसके बारे में आप ऐसा दृढ़ता से मान लें कि ये सभी लोग ऐसे ही हैं।	हाँ / नहीं
7. आप जिस संप्रदाय और धर्मगुरु को मानते हैं उनका अपमान अन्य कोई संप्रदाय करे तब आपको उस संप्रदाय या उनके धर्मगुरु के प्रति नेगेटिव विचार आते हैं?	हाँ / नहीं
8. जब दो अलग-अलग धर्म के लोग किसी बात पर झगड़ा करें तब...	हाँ / नहीं

अगर ऊपर के किसी भी प्रश्न में आपकी "हाँ" है तो धर्म, संप्रदाय तो ठीक है लेकिन जाने-अनजाने आप उनके भगवान की भी विराधना कर चूके हैं।

ऐसी परिस्थितियों में सच्ची बात जाने बगैर ही आप अपराध या अवर्णवाद में जाने-अनजाने फँस सकते हैं। **इसलिए सत्य हकीकत को खासतौर पर जानें और दूसरी कलम बोलकर ऐसा कभी न हो, ऐसा दृढ़ निश्चय करें।**

#कविता दादा के युवाओं द्वारा

सच्चा हो भले आपका, लेकिन कोई धर्म गलत नहीं होता...
सभी धर्म योग्य हैं, कोई छोटा या कोई बड़ा नहीं होता..

वैष्णव मेरे, अन्य पराए, ऐसा कृष्ण ने कहा नहीं है..
धर्मों ने बहुत कुछ सिखाया, पक्षपाती रवैया सिखाया नहीं है..

महावीर कहो या राम कहो, सभी ने वीतरागता कही है..
अपने-अपने स्तर पर, प्रत्येक धर्म ने सिर्फ छूटने की बात कही है..

सर्कल में जो जहाँ है वहाँ, अपनी दृष्टि से एकदम सच्चा है..
केन्द्र में खड़ा ठीक से जानता है, न कोई ऊँचा और न कोई नीचा है..

अंतिम धर्म अगर जानना है आपको तो वह स्वधर्म है..
आत्मज्ञानी को ढूँढकर, पहचान खुद की करना वही मर्म है..

Ymht and iStar

participants visit various places of worship in Ahmedabad.

Dargah, Thaltej

Gurudvara, S.G. Highway

Church, Sargasan

Iskcon Temple

जनवरी 2020
वर्ष : 7, अंक : 09
अखंड क्रमांक : 81

The First

Augmented Reality Magazine

Akram Youth AR App

View this page in AR App

Good News
for Everyone

Akram Youth AR
in just **30** mb

1 Step Download Akram Youth AR App

2 Step Download magazine pack of desired Issue

3 Step View this magazine through the App

For details, watch the intro video in the app. http://tiny.cc/akramyouthar

Send your suggestions and feedback at: akramyouth@dadabhagwan.org
Printed and Published by Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation-Owner.
Printed at : Amba Offset, B-99, GIDC, Sector-25, Gandhinagar – 382025.